ISSN 0973-2616

सी एस आई आर समाचार

वर्ष 24 अंक 12 दिसम्बर 2007

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् का गृह-बुलेटिन

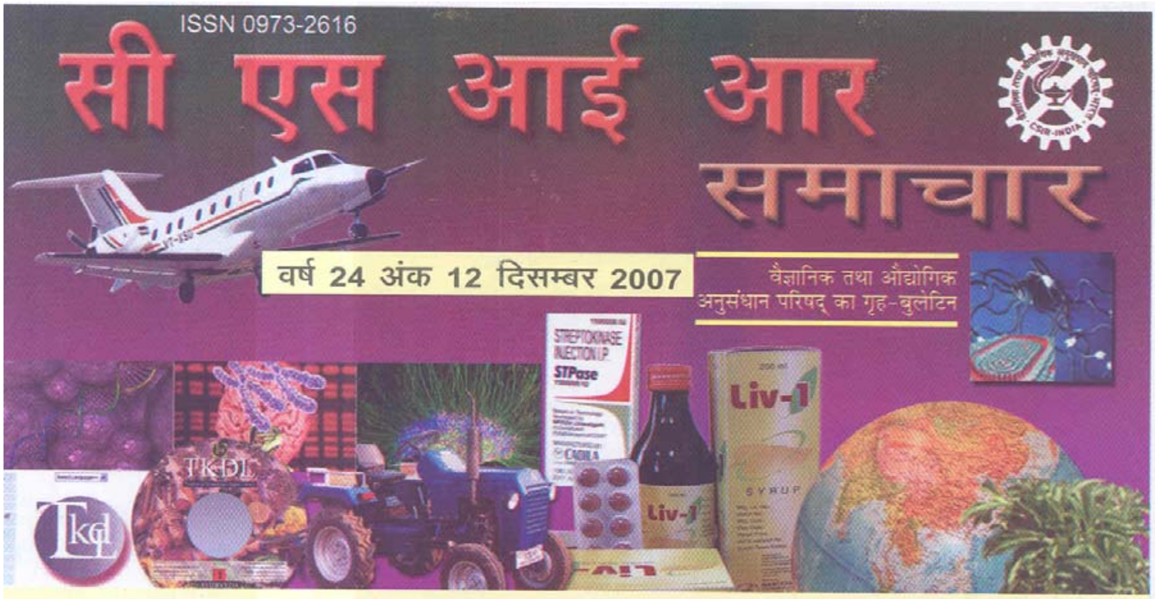

डॉ. समीर के. ब्रह्मचारी ने सीएसआईआर के महानिदेशक का पदभार संभाला

डॉ. समीर के. ब्रह्मचारी, निदेशक, जीनोमिकी और समवेत जीवविज्ञान संस्थान (इंस्टीट्यूट ऑफ जीनोमिक्स एण्ड इंटीग्रेटेड बायोलॉजी), ने वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान अनुभाग (DSIR) के सचिव तथा महानिदेशक, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) का कार्यभार 12 नवम्बर 2007 को संभाला। यह कार्यभार उन्होंने डॉ. टी. रामासामी, सचिव, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग, जिनके पास महानिदेशक, सीएसआईआर तथा सचिव, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान विभाग का अतिरिक्त कार्यभार था, से लिया। 11 अगस्त 1997 को आईजीआईबी के निदेशक का कार्यभार संभालने से पूर्व डॉ. बह्मचारी भारतीय विज्ञान संस्थान (IISc) बंगालुरू में मॉलीक्युलर बायोफिजिक्स तथा जेनेटिक इंजीनियरिंग के प्रोफेसर के पद पर कार्यरत थे।

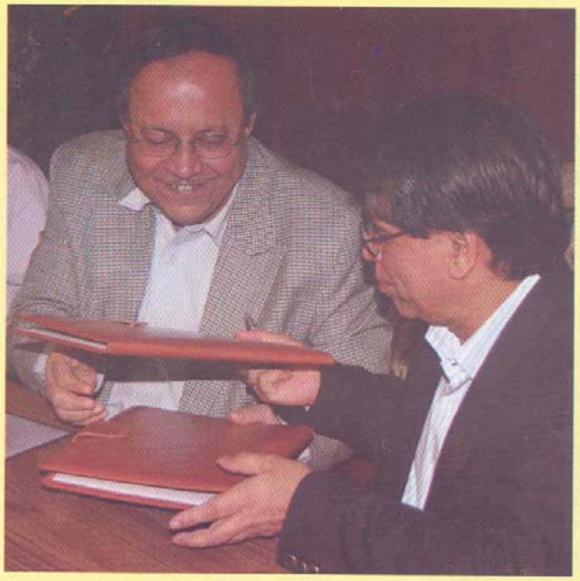

डॉ. समीर के. ब्रह्मचारी, डॉ. टी. रामासामी से सचिव, डीएसआईआर तथा महानिदेशक, सीएसआईआर का कार्यभार लेते हुए

डॉ. समीर के. ब्रह्मचारी, महानिदेशक, सीएसआईआर

आईजीआईबी के निदेशक के रूप में डॉ. ब्रह्मचारी ने अभूतपूर्व परिवर्तन करके उत्पादन, विपणन एवं धनोपार्जन में विशेषज्ञ उद्योगों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित किये। **जीनोम्ड** समझौता और **टीसीजीए** परियोजना इसी का परिणाम है।

डॉ. ब्रह्मचारी ही वह पहले व्यक्ति हैं, जिन्होंने जीनोम्ड की परिकल्पना और कार्यान्वयन किया। भारत में अपनी तरह का पहला समझौता जो एक सरकारी संस्थान - आईजीआईबी तथा एक फार्मायुटिकल कम्पनी - निकोलस पिरामल इंडिया लिमिटेड के साथ हुआ। यह ज्ञानाधारित समझौता जीनोमिक्स, फार्माकोजीनोमिक्स तथा बायोइन्फॉर्मेटिक्स के अध्ययन तथा विकास को समर्पित था। इससे पहली पूर्वानुमानित नैदानिक दवा, दमा की औषधियों के प्रति अप्रतिक्रियात्मक रोगियों के लिये विकसित की गई। इस परियोजना ने अब तक दो अन्तरराष्ट्रीय पेटेण्ट फाइल किये हैं। डॉ. ब्रह्मचारी ने ही **टीसीजीए** यानी **द सेंटर फॉर जीनोमिक्स अप्लीकेशन** की परिकल्पना और सृजन भी किया। यह चटर्जी ग्रुप तथा आईजीआईबी/सीएसआईआर/डीएसटी की सहयोगात्मक आर एण्ड डी परियोजना है। यह परियोजना आईजीआईबी को देश में जीनोमिक्स रिसर्च में नेतृत्व प्रदान करती है। जिनके द्वारा आईजीआईबी अपने ज्ञान का प्रचार-प्रसार करके देश में जीनोमिक्स तथा प्रोटियोमिक्स का वृहत स्तर पर विकास करके अपने अधिदेश को पूर्ण करती है।

कोलकाता विश्वविद्यालय से रसायन शास्त्र में बीएससी (ऑनर्स) तथा फिजिकल कैमिस्ट्री में एमएससी. करने के बाद उन्होंने भारतीय विज्ञान संस्थान से मॉलीक्युलर बायोफिजिक्स में पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। डॉ. ब्रह्मचारी भारत में जीनोमिकी के क्षेत्र में कार्य करने की पहल करने वाले पहले व्यक्ति थे और उन्होंने इंडियन जीनोम वैरियेशन कंसोर्टियम प्रोजेक्ट का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया और वे वर्तमान में लक्षित औषधि विकास के लिए एक राष्ट्रीय नेटवर्क परियोजना **इन सिलिको बायोलॉजी** का समन्वयन कर रहे हैं। उन्होंने और उनके सहयोगियों ने **शिजोफ्रेनिया** तथा **बाइपोलर विकारों** के लिये दो जीनों की सम्बद्धता का प्रदर्शन किया तथा अनेक एसएनपी (SNP) विभिन्न तंत्रिका विकारों से सम्बद्ध चिह्नों को पहचाना। वे पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने यह खोज की कि कैसे मानव miRNA एचआईवी (HIV) जीनों को लक्ष्यित कर सकता है और वाइरस बहुगुणन को नियंत्रित कर सकता है। इस प्रकार उन्होंने वायरसरोधी चिकित्सा के लिये नये द्वार खोल दिये।

डॉ. ब्रह्मचारी को अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हुये हैं, जिनमें सम्मिलित हैं-

- नेशनल साइंस टेलेंट सर्च स्कॉलरशिप - एनसीईआरटी, 1968
- युवा वैज्ञानिक पदक, इन्सा, 1979
- केनि मेडल, नेशनल कैंसर रिसर्च सेंटर, टोक्यो जापान, 1981
- गुहा रिसर्च कॉन्फ्रेंस (भारत) के मनोनीत सदस्य, 1986
- कामा मेमोरियल अवार्ड, सोसायटी ऑफ बायोलॉजिकल कैमिस्ट (इंडिया), 1990
- जैविक विज्ञान में सीएसआईआर का शान्तिस्वरूप भटनागर पुरस्कार 1990
- भारतीय विज्ञान अकादमी की फैलोशिप, 1991
- मानव जीनोम संगठन (HUGO) के मनोनीत सदस्य, 1991
- भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (इन्सा) की फैलोशिप 1995
- सोसायटी आफ बायोलॉजिकल कैमिस्ट (भारत) द्वारा सीआर कृष्णमूर्ति ओरेशन अवार्ड, 1998
- कृषि सहित जीवविज्ञान में व्यक्तिगत पहल के लिये फिक्की अवार्ड 1998-99
- भारतीय विज्ञान कांग्रेस, 2000 द्वारा मिलेनियम मेडल, 2000
- नेशनल एकेडेमी ऑफ साइंसेज, इलाहाबाद, 2001 द्वारा फैलोशिप
- चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में चिकित्सा अनुसंधान के लिये रैनबैक्सी रिसर्च अवार्ड, 2001
- जीवविज्ञान के क्षेत्र में कुरुक्षेत्र युनिवर्सिटी द्वारा गोयल पुरस्कार 2001
- जवाहरलाल नेहरू युनिवर्सिटी द्वारा बी.के. बच्छावत ओरेशन लेक्चर अवार्ड, 2003

- सीडीआरआई, लखनऊ द्वारा सी.आर. कृष्णामूर्ति ओरेशन अवार्ड, 2003
- ह्यूमैन जीनोम ऑर्गेनाइजेशन के ह्यूगो द्वारा मनोनीत परिषद सदस्य, 2004
- इंडियन कैमिकल सोसाइटी द्वारा प्रो. पी.पी.के. बोस मैमोरियल अवार्ड, 2004
- बायोटिक रिसर्च सोसायटी ऑफ इंडिया के फैलो-2005

डॉ. ब्रह्मचारी, भारत सरकार की कई टास्ककोर्स और समितियों के सदस्य; 1997 से विशेषज्ञ ग्रुप के सदस्य, संयुक्त राष्ट्र; इण्डोयूरोपियन कमीशन के एस एण्ड टी स्टीयरिंग कमेटी के सदस्य भी हैं। वे जीनोमिक्स में X-प्राइज की सलाहकार समिति के सदस्य भी हैं जिसमें विश्व के प्रमुख जीनोमिक वैज्ञानिक सम्मिलित हैं।

डॉ. ब्रह्मचारी जीनोमिक रिसर्च तथा मानवाधिकार मुद्दों से भी जुड़े हुये हैं। मानवाधिकार उच्चायोग के सलाहकार के रूप में उन्होंने तीसरी दुनिया के जैनेटिक रिसोर्सेज के अनैतिक उपभोग पर कई मुद्दों पर भाषण दिये हैं और जीनोमिक औषधियों के विकास में लाभांश की हिस्सेदारी में रोगियों के लाभ के पहलू पर समर्थन प्राप्त किया है उन्होंने ज्ञान भागीदारी के नये कार्यक्रम के माध्यम से इण्डस्ट्री-एकेडेमिया इंटरएक्शन को प्रोत्साहित करने के लिये पर्याप्त योगदान दिया है।

डॉ. ब्रह्मचारी के 130 से भी अधिक प्रकाशन प्रमुख अन्तरराष्ट्रीय अनुसंधान पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं और पांच पेटेण्ट तथा 10 सॉफ्टवेयर कॉपीराइट उनके नाम पर हैं।

आईपीसीसी को शान्ति के लिये नोबेल पुरस्कार और सीएसआईआर वैज्ञानिकों का योगदान

अमेरिका के भूतपूर्व उपराष्ट्रपति अलगोर और इंटरगवर्नमैंट पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज (IPCC) के प्रमुख श्री राजेन्द्र के. पचौरी को संयुक्त रूप से वर्ष 2007 का नोबेल शान्ति पुरस्कार प्रदान किया गया है। यह पुरस्कार उन्हें कृत्रिम कारणों से हुये जलवायु परिवर्तनों तथा उनसे निपटने के उपायों के ज्ञान के प्रचार-प्रसार करने के

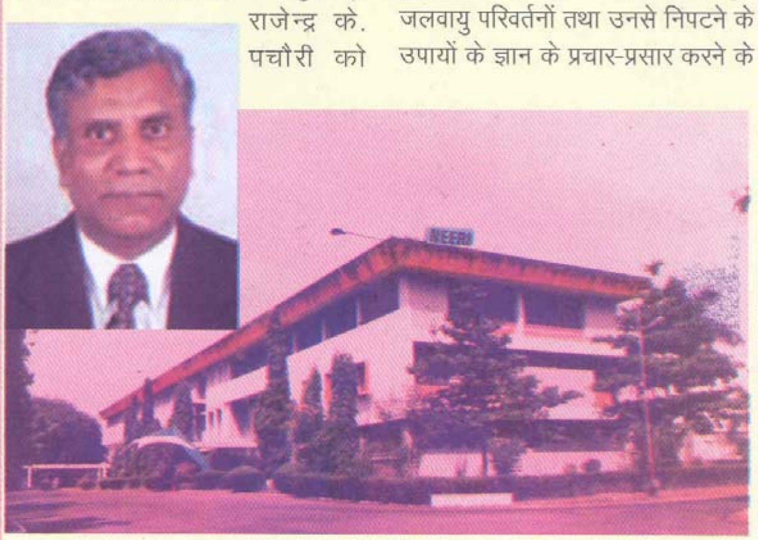

डॉ. सुकुमार डिवोट्टा

डॉ. ए.एस. उन्नीकृष्णन

आईपीसीसी-भारत के सदस्य माननीय प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के साथ

लिये दिया गया है। नोबेल शांति पुरस्कार समिति ने कहा कि इस वर्ष का नोबेल शांति पुरस्कार उनको कृत्रिम जलवायु परिवर्तनों के बारे में प्रयास करने तथा उनके बारे में विस्तृत जानकारी का प्रचार-प्रसार करने और ऐसे परिवर्तनों से निपटने के लिये आवश्यक उपायों को नींव रखने के लिये दिया गया है, जो पिछले नोबेल शांति पुरस्कारों से थोड़ा अलग है।

आईपीसीसी की स्थापना विश्व मौसम संगठन (वर्ल्ड मैटिरोलॉजीकल आर्गेनाइजेशन, WMO) तथा संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूनाइटेड नेशन्स एनवायरोनमैंट प्रोग्राम, UNEP) द्वारा जलवायु परिवर्तन को समझने के लिये वैज्ञानिक, तकनीकी तथा सामाजिक-आर्थिक सम्बन्धित सूचना के मूल्यांकन के लिये और इसके सक्षम प्रभावों तथा अनुकूलन और प्रशामन के लिये विकल्प ढूंढने के लिये की गई। इसकी वर्तमान चौथी मूल्यांकन रिपोर्ट **क्लाइमेट चेंज 2007** (जिसे AR4 के नाम से भी जाना जाता है) को अंतिम रूप दिया जा रहा है। तीन कार्यदलों द्वारा उपलब्ध कराई गई यह रिपोर्ट व्यापक जानकारी के साथ जलवायु परिवर्तन पर ज्ञान की वर्तमान स्थिति के मूल्यांकन की सटीक जानकारी देगी। कार्यदल-। (WG-I) ने फिजिकल साइंस बेसिस; कार्यदल-।। (WG-II) ने प्रभाव, अनुकूलन और कमी और कार्यदल-।।। (WG-III) ने जलवायु परिवर्तनों के प्रशामन की रिपोर्टिंग की है।

आईपीसीसी को नोबेल पुरस्कार मिलने की खुशी में श्री राजेन्द्र पचौरी ने हर्ष व्यक्त करते हुये कहा कि यह सम्मान जलवायु परिवर्तन पर उन हजारों वैज्ञानिकों को प्राप्त हुआ है, जिन्होंने अपने संगठनों के परिशुद्ध पारदर्शी वैज्ञानिक मूल्यांकन कार्यकलापों के माध्यम से सर्वसम्मत दस्तावेज विकसित किया है।

आईपीसीसी के सचिव श्री रिनेट क्राइस्ट ने कहा कि नोबेल पुरस्कार मिलने से आईपीसीसी को प्रभावशाली पहचान मिली है क्योंकि आईपीपीसी ने जलवायु परिवर्तन के कोर्स, प्रभाव और संभावित उपायों के बारे में उद्देश्य और सटीक सूचनाओं सहित नीति निर्माताओं के लिये महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध करायी है।

विश्व के कई क्षेत्रों के सैकड़ों लेखकों ने इस रिपोर्ट को लिखने और समीक्षा को तैयार करने के लिये स्वेच्छा से अपना अमूल्य समय दे कर अथक परिश्रम निष्ठापूर्वक किया है और इसके लिये किसी को भी कोई पारिश्रमिक

नोबेल पुरस्कार से सम्मानित श्री अलगोर और डॉ. राजेन्द्र के. पचौरी

नहीं दिया गया। सीएसआईआर को डॉ. सुकुमार डिवोट्टा, निदेशक, राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (नीरी), नागपुर तथा डॉ. ए.एम. उन्नीकृष्णन, वैज्ञानिक, राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान (एनआईओ), गोआ के आईपीसीसी के सदस्य होने पर गर्व है।

डॉ. डिवोट्टा ने आईपीसीसी के सदस्य होने के नाते चार आईपीसीसी रिपोर्ट नामतः • मैथोडोलॉजिकल एण्ड टैक्नीकल इशूज इन टेक्नोलॉजी ट्रांसफरः कार्यदल-III (2000) की एक विशेष रिपोर्ट; • क्लाइमेट चेंज 2001: मिटिगेशन (2001) • आईपीसीसी/टीइएपी की विशेष रिपोर्ट • ओजोन परत तथा वैश्विक जलवायु तंत्र की सुरक्षा के लियेः HFCs तथा PFCs से सबद्ध मुद्दों पर (2005) तथा नेशनल ग्रीन हाउस इन्वेंट्रीज फार इण्डस्ट्रियल प्रोसेसेज एण्ड प्रोडक्ट यूज (2006) में अपना योगदान दिया।

इस सम्मान को प्राप्त करने के लिये आईपीसीसी के उपाध्यक्षों डॉ. ओगुनालेड डेविडसन तथा डॉ. बर्ट मेट्ज ने ईमेल द्वारा डॉ. डिवोट्टा को हार्दिक बधाई दी है जिनके प्रत्युत्तर में डॉ. डिवोट्टा ने आईपीसीसी के कार्य को कैमिकल इंजीनियर होने के नाते निरन्तर समर्थन देने की बात कही है।

सीएसआईआर की प्रयोगशाला एनआईओ के वैज्ञानिक डॉ. ए.एस. उन्नीकृष्णन ने कार्यदल-I के अन्तर्गत अध्याय-5 के प्रमुख, लेखक दल के रूप में रिपोर्ट • ऑब्जर्वेशनः ओशियन क्लाइमेट चेंज एण्ड सी लेवल पर चौथी मूल्यांकन रिपोर्ट तैयार की, अध्याय-5, तीन और चार से अन्तर्सम्बद्ध है।

एनईआईएसटी वैज्ञानिक के अनुसंधान प्रकाशनों को साइंस डाइरेक्ट के 25 शीर्षस्थ प्रमुख लेखों में स्थान प्राप्त

डॉ. एन.सी. बरुआ, वैज्ञानिक एफ और उनकी टीम, जो उत्तर-पूर्व विज्ञान एवं प्रौद्योगिक संस्थान, (NEIST), जोरहाट में प्राकृतिक उत्पाद रसायन पर कार्य कर रही है, के दो अनुसंधान प्रकाशनों को साइंस डाइरेक्ट द्वारा रसायन में शीर्षस्थ प्रमुख 25 लेखों टेट्राहेड्रॉन, एसिमैट्री ऑफ ग्लोबल पर्सपेक्टिस में लगातार दो वर्षों यथा 2006 और 2007 के पहली दो तिमाहियों में स्थान दिया गया है।

ये दोनों अनुसंधान प्रकाशन हैं-

1. कैटालिटिक एसिमैट्रिक हेनरी रिएक्शन - रिव्यू आर्टिकल टेट्राहेड्रॉनः एसिमेट्री, खण्ड 17, अंक 24, दिसम्बर, पृष्ठ 3315-3326 लेखक-बरुआ जे., गोगोई एन., सैकिया पी.पी. तथा बरुआ एन.सी.
2. स्टेरेसिलेक्टिव टोटल सिन्थेसिस ऑफ (+)- बोरोनोलाइड, टेट्राहेड्रॉन, लेखकः बोरुआ जे. और बरुआ एन.सी.

एनसीएल में नैनोपदार्थों सहित आण्विक पदार्थों पर भारत-ब्राजील कार्यशाला

राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे में दिनांक 4-5 अक्टूबर 2007 को नैनोपदार्थों सहित आण्विक पदार्थों पर पहली तीन दिवसीय भारत-ब्राजील कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार तथा ब्राजील विज्ञान अकादमी, ब्राजील ने प्रायोजित किया था। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगालुरू, टाटा मौलिक अनुसंधान संस्थान, मुम्बई, इलेक्ट्रॉनिक प्रौद्योगिकी पदार्थ केन्द्र, पुणे, भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, पुणे जैसे विविध अग्रणी संस्थानों के अलावा समूचे भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के लगभग 80 प्रतिभागियों ने इस कार्यशाला में भाग लिया। प्रोफेसर एफ. गैलमबेक ने ब्राजील के छह सुप्रतिष्ठित प्राध्यापकों के दल का नेतृत्व किया। कार्यशाला के छह सत्रों में पदार्थों से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर विचार-विमर्श किया गया।

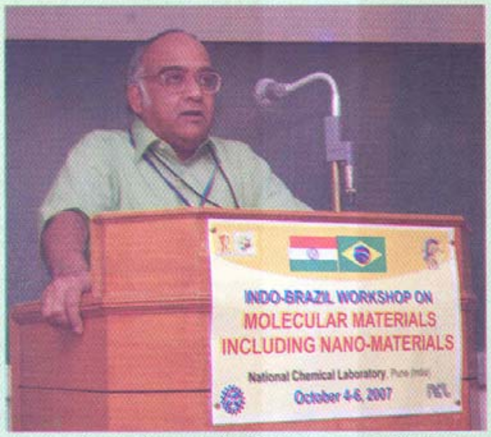

डॉ. एस. शिवराम, प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए

प्रोफेसर एफ. गैलमबेक अपने विचार व्यक्त करते हुए

भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगालुरू के प्रोफेसर अजय सूद ने 4 अक्टूबर 2007 के सायं कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में **कार्बन इन नैनोडाइमेन्शन्सः नैनोट्यूब्ज एण्ड ग्राफीन** नामक विषय पर प्रमुख व्याख्यान दिया। अपने व्याख्यान में उन्होंने कार्बन के विभिन्न त्रिविमीय रूपों का परिचय दिया जिसके अन्तर्गत उन्होंने त्रिविम में ग्रेफाइट एवं हीरा, द्विविम कार्बन फॉर्मिंग ग्राफीन की चादर (शीट्स), एकल त्रिविम रूप में सिंगल वॉल्ड एवं मल्टी वॉल्ड कार्बन नैनोट्यूबों के विविध गुणधर्मों का विस्तार से वर्णन किया। उन्होंने एकल एवं द्विविय कार्बनों के महत्व, उच्च दाब के अधीन नैनोट्यूबों का स्थायित्व, कार्बन नैनोट्यूबों पर आधारित नए पदार्थ एवं उनके गुणधर्म, नैनोट्यूबों में प्रवाह प्रेरित वॉल्टेज एवं धारा (करन्ट), प्रवाह एवं कम्पन संवेदन अनुप्रयोग, सिंगल वॉल्ड कार्बन नैनोट्यूबों में जल का परिरोध एवं उसकी स्थिति तथा परिरोध किए गए जल का गति-विज्ञान, ग्राफीन एवं कार्बन नैनोट्यूबों में फर्मी स्तर की ट्युनिंग तथा इलेक्ट्रॉन ट्रांसपोर्ट एवं इन प्रणालियों पर आधारित क्षेत्रीय प्रभाव वाले ट्रांजिस्टर, डीएनए जैसे जैवअणुओं के साथ नैनोट्यूबों की पारस्परिकक्रिया, नैनोट्यूबों एवं ग्राफीन का अपमिश्रण आदि के महत्व को स्पष्ट किया।

डॉ. एस. शिवराम, निदेशक, राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे ने कार्यशाला में उपस्थित अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि भारत एवं ब्राजील दोनों बड़े देश हैं तथा दोनों के कई परस्पर हित भी सामान्य हैं। भारत सरकार का विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग एवं ब्राजील विज्ञान अकादमी ने भारत तथा ब्राजील के बीच विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पारस्परिक क्रियाकलापों को बढ़ावा देने के लिए अनुबन्ध किया है। दोनों देशों के बीच आयोजित यह पहली कार्यशाला इसी अनुबन्ध का परिणाम है। इस अनुबन्ध से दोनों देशों के वैज्ञानिकों को सामान्य हित के क्षेत्रों में एक साथ कार्य करने, संयुक्त प्रस्ताव, जिन्हें भारत

प्रोफेसर अजय सूद कीनोट व्याख्यान देते हुए

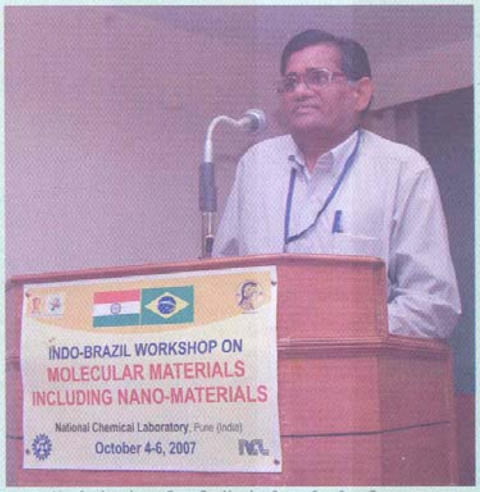

डॉ. बी.के. जैन प्रतिभागियों को डीएसटी की भूमिका तथा कार्यकलापों की जानकारी देते हुए

के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग तथा ब्राजील विज्ञान अकादमी द्वारा निधि उपलब्ध कराया जाएगा, प्रस्तुत करने के अवसर प्राप्त होंगे और दोनों देशों के बीच युवा शोधछात्रों, डॉक्टरोत्तर फैलो एवं प्रमुख अनुसंधानकर्ताओं का आदान-प्रदान भी आरम्भ होगा।

डॉ. बी.के. जैन, वैज्ञानिक एवं सलाहकार, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली ने अपने सम्बोधन में उक्त विभाग की भूमिका तथा कार्यों की संक्षेप में जानकारी दी। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग विभिन्न देशों में सत्तर से अधिक द्विपक्षीय अनुबन्धों का समन्वयन करता है। डॉ. जैन ने भारत एवं ब्राजील के बीच विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सहयोग के सम्बन्ध में श्रोताओं को जानकारी दी। उन्होंने कहा कि अगले कुछ वर्षों में विविध क्षेत्रों में कई कार्यशालाओं का आयोजन किया जाएगा। भारत एवं ब्राजील के बीच एक प्रस्ताव की घोषणा शीघ्र ही की जाएगी जिसमें संयुक्त कार्यशालाओं हेतु सहायता, सम्बन्ध स्थापित करने हेतु अल्पावधि के अनुसंधान दौरों तथा दो-तीन वर्षों की अवधि की संयुक्त अनुसंधान एवं विकास परियोजना का समावेश होगा। ब्राजील एवं भारत दोनों देश उभरती हुई अर्थव्यवस्थाएं होने के कारण वहां के आर्थिक विकास एवं लोगों के उत्थान हेतु विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी को प्रमुख साधन मानते हुए उसे अत्यधिक महत्व दिया गया है।

ब्राजील एवं भारत ने एक संयुक्त भारत-ब्राजील विज्ञान परिषद की स्थापना की है। भारत की ओर से प्रो. सी.एन.आर. राव, राष्ट्रीय अनुसंधान प्रोफेसर एवं लिनस पॉलिंग अनुसंधान प्रोफेसर, जवाहरलाल नेहरू प्रगत वैज्ञानिक अनुसंधान केन्द्र, बंगालूरू तथा ब्राजील की ओर से प्रो. जेकब पालीस, अध्यक्ष, ब्राजील विज्ञान अकादमी, रियो दी जानिरो इस परिषद के अध्यक्ष हैं।

डॉ. दिलीप कुमार एनएएस के फैलो चुने गये

डॉ. एम दिलीप कुमार, वैज्ञानिक राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान (एनआईओ), गोवा राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत के फैलो चुने गये हैं। वे पहले भी भारतीय विज्ञान अकादमी, बंगालुरु (1999) तथा भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (2005) के फैलो हैं।

डॉ. दिलीप कुमार की रुचि का मुख्य क्षेत्र उत्तरी हिन्दी महासागर की बायोजियोकैमिस्ट्री है। वे एनआईओ के एक सुप्राइंस्टीट्यूशनल प्रोजेक्ट साइंस फॉर डिवलमैंट ऑफ ए फोरकास्टिंग सिस्टम फॉर द वाटर्स अराऊंड इण्डिया के नोडल अधिकारी भी हैं। उनके अब तक 65 प्रकाशन अनेक प्रतिष्ठित अनुसंधान पत्रिकाओं और सम्मेलनों की प्रोसिडिंग में प्रकाशित हो चुके हैं।

सीएसआईओ ने मनाया अपना स्थापना दिवस

सीएसआईओ ने 30 अक्तूबर, 2007 को अपना 48वां स्थापना दिवस मनाया, इस अवसर पर प्रो. एस. एस. सुन्दरम, निदेशक, उपकरण अनुसंधान एवं विकास संगठन, देहरादून के अतिथि व्याख्यान का अयोजन किया गया।

प्रो. सुन्दरम् ने अपने व्याख्यान में कहा कि इलैक्ट्रो-ऑप्टिकी के रक्षा अनुप्रयोगों से हम शत्रुओं को आसानी से देख सकते हैं और रोचक बात यह है कि वे इससे अनभिज्ञ रहते हैं। यद्यपि इस प्रौद्योगिकी का उद्योग, रक्षा, चिकित्सा, उत्पादन तथा कला संरक्षण के क्षेत्रों में व्यापक अनुप्रयोग है, तथापि सेना तथा सरकारें इसकी प्रमुख उपभोक्ता हैं। नाइट विज़न सतर्कता जैसे जटिल उपकरण इसी प्रौद्योगिकी पर आधारित हैं।

प्रो. सुन्दरम ने अपने व्याख्यान से पूर्व संगठन की वर्ष 2006-07 की वार्षिक रिपोर्ट भी जारी की तथा डॉ. पवन कपूर, निदेशक, सीएसआईओ ने वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। डॉ. पवन कपूर ने बताया कि चूंकि यह वर्ष 10वीं पंचवर्षीय योजना के समापन तथा 11वीं पंचवर्षीय योजना के प्रारंभ का वर्ष था इसलिए सीएसआईओ विभिन्न योजनाओं के समापन व प्रारंभ का साक्षी रहा। इस अवसर पर उन्होंने संगठन द्वारा सफलतापूर्वक विकसित प्रौद्योगिकियों यथा हाइड्रॉलिक नी ज्वाइंट, मायोइलैक्ट्रिक आर्म, वॉयस ऑपरेटेड हैंड फॉर चैलेंज्ड आदि के बारे में भी जानकारी दी।

डॉ. कपूर ने अपनी रिपोर्ट में व्यापार विकास क्रियाकलापों में हुई अभूतपूर्व वृद्धि का उल्लेख किया, जिसके परिणाम स्वरूप विभिन्न आईटी तथा उद्योगों सहित प्रतिष्ठित शैक्षिक संस्थानों के साथ समझौता ज्ञापन व तकनीकी जानकारी का हस्तांतरण आदि हो पाए हैं तथा सीएसआईओ ने अनेक प्रदर्शनियों आदि में सक्रिय प्रतिभागिता की। उन्होंने विश्वास जताया कि 11वीं पंचवर्षीय योजना में संगठन गत पंचवर्षीय योजना में निर्धारित दिशा में उल्लेखनीय प्रगति करेगा।

मुख्य अतिथि संगठन की एक प्रयोगशाला के दौरे पर

सीएसआईओ की वार्षिक रिपोर्ट का विमोचन करते हुये प्रो. सुन्दरम

श्रीमती पूनम कपूर सांस्कृतिक कार्यक्रम में दीप प्रज्ज्वलित करते हुए

दर्शकदीर्घा में श्रोतागण

इससे पूर्व श्री ए. के. डिमरी, वैज्ञानिक, सीएसआईओ ने मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए सीएसआईओ स्थापना दिवस की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने सीएसआईओ को उपकरण विन्यास के क्षेत्र में एक अग्रणी संस्थान बनाने के लिए सीएसआईओ स्टाफ से सहयोग की अपील की।

सायंकाल में सीएसआईओ स्टाफ क्लब और सीएसआईओ लेडीज क्लब के सदस्यों द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अन्त में श्री एस.के. सडाना, प्रशासन नियंत्रक ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (निस्केयर), नई दिल्ली में सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न

26 सितम्बर 2007 को निस्केयर के 14, सत्संग विहार परिसर में 65वां सीएसआईआर स्थापना दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

इस अवसर पर हमदर्द विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के उपकुलपति तथा सीरी, (सीएसआईआर), पिलानी के भूतपूर्व निदेशक डॉ. एस. अहमद को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। निस्केयर के कार्यकलापों की प्रशंसा करते हुये

दीप प्रज्ज्वलित करते हुए मुख्य अतिथि डॉ. एस. अहमद

सम्बोधन देते हुए श्री एस.के. रस्तोगी और डॉ. एस. अहमद

मुख्य अतिथि डॉ. एस. अहमद ने अपने सम्बोधन में कहा कि निस्केयर तथा हमदर्द विश्वविद्यालय कुछ कार्यक्रमों में सहयोगात्मक रूप से कार्य कर सकते हैं। इससे पूर्व स्थापना दिवस आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री प्रकाशचन्द ने स्वागत भाषण दिया तथा मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुये उनका परिचय दिया और संस्थान की गतिविधियों पर प्रकाश डाला।

तत्पश्चात निस्केयर के कार्यकारी निदेशक श्री एस.के. रस्तोगी ने उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुये संस्थान की गतवर्ष की प्रगति का सार प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर निस्केयर में संस्थान के कार्मिकों एवं उनके परिवार के सदस्यों के लिये अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था।

श्री प्रदीप बनर्जी, वैज्ञानिक-एफ ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया। समारोह का समापन रंगारंग कार्यक्रम के साथ सम्पन्न हुआ, जिसका आनन्द कुछ समय तक मुख्य अतिथि ने भी उठाया। मुख्य अतिथि ने संस्थान में अपनी सेवा 25 वर्ष पूरा करने वाले तथा गतवर्ष के दौरान सेवानिवृत्त हुये कार्मिकों को स्मृतिचिह्न प्रदान किये।

कार्यक्रम के अन्त में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को भी पुरस्कार प्रदान किये गये और इसके साथ ही समारोह सम्पन्न हुआ।

श्री प्रकाशचन्द स्वागत भाषण देते हुए

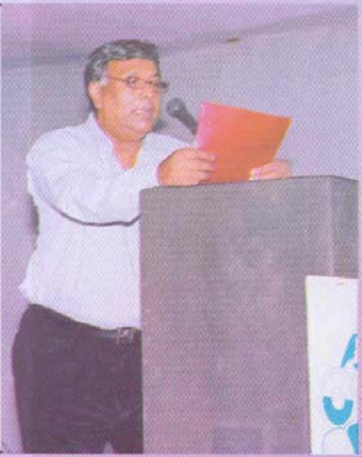

श्री प्रदीप बनर्जी धन्यवाद प्रस्ताव देते हुए

एनसीएल में सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह

राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (एनसीएल), पुणे में 26 सितम्बर 2007 को वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) का 65वां स्थापना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर डॉ. नरेन्द्र जाधव, जो एक विख्यात अर्थशास्त्री हैं, ने **उच्च शिक्षा की समस्याएं एवं उनकी चुनौतियां** नामक विषय पर व्याख्यान दिया।

डॉ. एस. शिवराम, निदेशक, एनसीएल ने डॉ. जाधव एवं श्रोताओं का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि डॉ. जाधव एक सुप्रतिष्ठित अर्थशास्त्री हैं जिन्होंने पिछले तीस वर्षों तक भारतीय रिज़र्व बैंक में विभिन्न पदों पर कार्य किया है। डॉ. जाधव एक सफल लेखक भी हैं और उनकी मराठी एवं अंग्रेजी में ग्यारह पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उनकी कई पुस्तकों का भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। उनकी अत्याधिक लोकप्रिय मराठी पुस्तक **आमचा बाप आणि आम्ही** के कारण पाठकों के बीच उनकी विशेष पहचान बनी है।

डॉ. जाधव ने अपने व्याख्यान में 1990 के दशक में आरम्भ किए गए आर्थिक उदारीकरण के बाद से आर्थिक विकास, विदेश मुद्रा भण्डार, उच्च शिक्षा में समस्या एवं उसमें पुणे विश्वविद्यालय की भूमिका तथा गुणतायुक्त मानवशक्ति निर्माण करने में पुणे विश्वविद्यालय के साथ एनसीएल की भूमिका जैसे विषयों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा की साठ वर्षों के बाद पहली बार देश के लोगों में अपने भविष्य के बारे में अत्यधिक आत्मविश्वास निर्माण हुआ है। वर्ष 1991 में देश को अभूतपूर्व आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा तथा उस समय देश में विदेशी मुद्रा का भी अभाव था। तत्पश्चात देश ने अपनी आर्थिक नीतियों में परिवर्तन किए और धीरे-धीरे देश की विकास दर बढ़ते हुए आरम्भ में साढ़े तीन प्रतिशत से बढ़कर छह प्रतिशत हुई तथा अन्त में नौ प्रतिशत तक पहुंची। डॉ. जाधव ने विकास दर एवं प्रति व्यक्ति विकास दर की तुलना जीवन-स्तर से की। उनके द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों से यह स्पष्ट हुआ कि प्रति व्यक्ति की आय में वृद्धि के कारण लोगों के जीवन-स्तर में पर्याप्त रूप से सुधार हुआ है। अब विदेशी मुद्रा भण्डार भी 200 बिलियन डॉलर से भी अधिक का हो गया है जिससे विश्व में सबसे अधिक विदेशी मुद्रा भण्डार वाला भारत छठवां देश बन गया है। पिछले तीन वर्षों से हमारे देश ने दूसरे देशों को ऋण देना आरम्भ किया है जबकि इससे पूर्व यह अपना ऋण चुका रहा था। डॉ. जाधव ने कहा कि यद्यपि विकास की दर की गति तेज हुई है किन्तु इस अर्थव्यवस्था में रोजगार के निर्माण की गति धीमी हुई है तथा इन दोनों की बीच के अन्तर को कम करने की चुनौती हमारे सामने है। उन्होंने कहा की भारतीय जनसंख्या के 24 प्रतिशत लोग गरीबी की रेखा के नीचे जीवन बिताते हैं। डॉ. जाधव ने आगे कहा कि सकल घरेलू उत्पाद के मामले में यद्यपि भारत विश्व में दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, किन्तु मानव विकास सूची में सार्वजनिक स्वास्थ्य, शिक्षा आदि पहलुओं के आधार पर भारत का स्थान अन्तिम बीस देशों में आता है। इस सम्बन्ध में सर्वेक्षण किए गए 134 देशों में भारत का 124वां स्थान है।

डॉ. एस. शिवराम डॉ. जाधव का स्वागत करते हुए

डॉ. जाधव ने भारत की एक बड़ी युवा एवं उत्पादक आबादी को उचित शिक्षा एवं प्रशिक्षण देने पर बल दिया। उन्होंने युवा एवं बढ़ती हुई आबादी को देश की सबसे बड़ी सम्पत्ति (जनसांख्यिकीय लाभांश) बताया। उन्होंने भारतीय शिक्षा

डॉ. जाधव व्याख्यान देते हुए

में पर्याप्त सार्वजनिक निवेश, पुराने हो चुके पाठ्यक्रम तथा अध्यापकों के प्रशिक्षण पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाना जैसी कई समस्याओं की ओर संकेत किया जिनकी ओर तत्काल ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। तत्पश्चात डॉ. जाधव ने इनमें से कुछ समस्याओं के निराकरण की दिशा में पुणे विश्वविद्यालय द्वारा आरम्भ किए गए कार्यों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि आज पुणे विश्वविद्यालय में सबसे अधिक छात्र शिक्षा पा रहे हैं जिनमें सम्बद्ध संस्थाओं एवं महाविद्यालयों के अलावा बड़ी संख्या में विदेशी छात्र भी हैं। उन्होंने आगे बताया की पुणे विश्वविद्यालय अपने एवं सम्बद्ध महाविद्यालयों के बीच तीन स्तरों - दृक्-श्रव्य एवं ध्वनि - पर सम्बन्ध स्थापित करने जा रहा है तथा यह व्यवस्था विश्व में इस प्रकार की उत्कृष्ट व्यवस्थाओं के समान ही होगी। उन्होंने कहा कि पुणे विश्वविद्यालय की छात्रों के संप्रेषण एवं अन्य कौशल को उन्नत करके उनका व्यक्तित्व-विकास करने की योजना है। छात्रों के व्यक्तित्व-विकास की इस परियोजना को पुणे, अहमदनगर, नासिक एवं बारामती में शुरु किया जायेगा। पुणे विश्वविद्यालय द्वारा **समर्थ भारत अभियान** के प्रचार का भी प्रस्ताव है जिसके अन्तर्गत प्रत्येक महाविद्यालय अपने पास ही के एक गांव को दत्तक लेकर प्राथमिक शिक्षा, सफाई, पेड़ लगाना, पर्यावरण, जल प्रबन्धन, सांप्रदायिक सामंजस्य, जीआईएस मैपिंग आदि से सम्बन्धित ज्ञान से उन गांवों के कल्याणार्थ योजनाएं चलाता है। पुणे विश्वविद्यालय विश्व के अन्य विश्वविद्यालयों के साथ सम्बन्ध स्थापित करके अपने वैश्विक सम्बन्धों को बढ़ाने की योजना भी बना रहा है।

डॉ. जाधव ने पुणे विश्वविद्यालय की एनसीएल के साथ सामान्य हित के कई क्षेत्रों में कार्य करने की इच्छा व्यक्त की, जिनमें से एक है समाज के हित के लिए उच्च गुणता वाले पीएच.डी. के शोधछात्र निर्माण करना। उन्होंने बताया की पुणे विश्वविद्यालय, एनसीएल एवं भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान संयुक्त रूप से मौलिक विज्ञान के क्षेत्र में उच्च गुणता की शिक्षा का शक्तिस्थल बन कर एक हजार पांच सौ से अधिक पीएच.डी के छात्र निर्माण करने में अपना योगदान दे सकते हैं।

इस अवसर पर पिछले एक वर्ष के दौरान सेवानिवृत्त हुए, परिषद की सेवा में पच्चीस वर्ष पूरे करने वाले परिषद के कर्मचारियों, एनसीएल द्वारा आयोजित की गई विज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के विजेता छात्रों तथा बारहवीं की परीक्षा में विज्ञान एवं गणित विषयों में 90 प्रतिशत एवं अधिक अंक प्राप्त करने वाले परिषद कर्मचारियों के बच्चों को डॉ. जाधव ने स्मृतिचिह्न प्रदान किए। इसके अलावा सीएसआईआर खेलकूद प्रोत्साहन बोर्ड द्वारा दिए जाने वाले पुरस्कार भी प्रदान किए गए। समारोह के अन्त में डॉ. शिवराम ने आभार प्रदर्शन किया।

डॉ. ए.आर. उपाध्या आईएए के संवादी सदस्य चुने गये

डॉ. ए.आर. उपाध्या, निदेशक, राष्ट्रीय वांतरिक्ष प्रयोगशालाएं, बंगालुरु, इंटरनेशनल एकेडेमी ऑफ एस्ट्रोनॉटिक्स के सेक्शन (सोशियल सांइस) के संवादी सदस्य के रूप में चुने गये। डॉ. उपाध्या को यह उपाधि पत्र 23 सितम्बर 2007 को हैदराबाद में अन्तरराष्ट्रीय एस्ट्रोनॉटिकल कांग्रेस की एकेडेमी मीटिंग में दिया गया।

केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रूड़की में सीएसआईआर का स्थापना दिवस समारोह

देश की विश्व विख्यात वैज्ञानिक एवं औद्योगिक परिषद (सीएसआईआर) का स्थापना दिवस 26 सितम्बर 2007 को केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रूड़की में भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर समारोह के मुख्य अतिथि श्री लावण्येन्दु मानसिंह, आईएएस, अध्यक्ष, पेट्रोलियम एंड नेचुरल गैस रेगुलेटरी बोर्ड, भारत सरकार, नई दिल्ली थे। केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रूड़की के निदेशक डॉ. मधुकर ओंकारनाथ गर्ग ने समारोह की अध्यक्षता की। संस्थान के वैज्ञानिक श्री यादवेन्द्र पाण्डेय ने सभा का संचालन करते हुए समारोह में उपस्थित संस्थान के कर्मचारियों एवं बाहर से आये गणमान्य व्यक्तियों का गर्मजोशी से स्वागत किया।

संस्थान के वरिष्ठतम वैज्ञानिक डॉ. अशोक कुमार गुप्ता ने सीएसआईआर की प्रयोगशालाओं में सीबीआरआई के योगदान पर प्रकाश डाला एवं मुख्य अतिथि का उपस्थित जनसमुदाय से परिचय कराया।

समारोह में संस्थान के निदेशक डॉ. मधुकर ओंकारनाथ गर्ग ने मुख्य अतिथि एवं अन्य विशिष्ट अतिथियों का स्वागत करते हुए अपने सरल एवं सारगर्भित सम्बोधन में उपस्थित जनसमुदाय को अवगत कराया कि संस्थान की स्थापना 1947 में एक छोटी सी इकाई के रूप में हुई थी। अब वही छोटी सी इकाई बड़े संस्थान के रूप में भवन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकियों के विभिन्न पहलुओं पर कार्य कर रही है जिनमें वास्तुकला एवं नियोजन, ग्रामीण भवन एवं पर्यावरण, संरचना एवं नींव भू तकनीकी इंजीनियरी, भवन दक्षता, निर्माण सामग्री तथा अग्नि अभियान्त्रिकी प्रमुख हैं। उन्होंने जानकारी दी कि संस्थान देश के गरीब से गरीब व्यक्ति की आवास समस्या के समाधान के लिए सर्वथा उपयुक्त तथा सस्ते आवास पर उपलब्ध कराने की दिशा में कार्य कर रहा है।

प्रतियोगिता के एक विजेता को पुरस्कार देते हुए मुख्य अतिथि

डॉ. मधुकर ओंकारनाथ गर्ग ने संस्थान की स्थापना के ऐतिहासिक समय को याद दिलाते हुए जनमानस को बताया कि संस्थान के नये भवन की आधारशिला 10 फरवरी 1951 को श्री श्रीप्रकाश द्वारा पंडित जवाहरलाल नेहरू की उपस्थिति में उस वक्त रखी गई जब भारतवर्ष अनेक प्रकार की समस्याओं से जूझ रहा था जिनमें देश के लिये आवास समस्या एवं अत्याधिक गरीबी प्रमुख थी। उन्होंने जानकारी दी कि वर्तमान समय में देश की तकनीकी मानव शक्ति विश्व में सर्वाधिक है अतः हमें इसका उपयोग देश की उन्नति एवं विकास के लिये करना चाहिए। उन्होंने सभी वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों को मिलजुल कर केवल भवनों के लिए ही नहीं अपितु सड़क, रेलवे एवं पावर आदि के क्षेत्रों में निर्माण प्रौद्योगिकी की आवश्यकता पर बल दिया।

मुख्य अतिथि श्री लावण्येन्दु मानसिंह ने अपने सुव्यवस्थित, सरल एवं संक्षिप्त सम्भाषण में सिविल अभियान्त्रिकी में अनुसंधान एवं विकास की आवश्यकता को अति महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान के कार्यों की देश की प्रगति एवं विकास के लिए सराहना की। उन्होंने वैज्ञानिकों से भवन संरचना के क्षेत्र में ऐसी अनुसंधान एवं विकास के कार्यों को करने के लिए बल दिया जिससे भवन निर्माण की गुणवत्ता बढ़े, निर्माण लागत कम हो, तथा भवन पर्यावरण सहायक हों। श्री मानसिंह ने अपने सम्बोधन में कहा कि परम्परागत विधियों से बनाये गये मकानों में भूकम्प जैसी आपदा की भयावहता को झेलने की क्षमता नहीं होती है इसलिए इन मकानों को भूकम्प जैसी आपादाओं में भारी नुकसान होता है अतः अब समय आ गया है कि बड़े भवनों के निर्माण में भूकम्परोधी तकनीक को अपनाया जाना अनिवार्य बनाए जाने की आवश्यकता पर बल दिया।

मुख्य अतिथि ने इस वर्ष सेवानिवृत्त हुए एवं 25 वर्षों की सेवा पूर्ण कर लेने वाले कर्मचारियों व अधिकारियों को शाल-घड़ी आदि प्रदान कर सम्मानित किया इसके अलावा संस्थान में **वैज्ञानिक शक्तियों द्वारा मनोनुकूल संसार का निर्माण** विषय पर संस्थान द्वारा अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बच्चों में विज्ञान के प्रति रुचि बढ़ाने हेतु आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किये। इस अवसर पर मुख्य अतिथि को संस्थान की ओर से निदेशक डॉ. मधुकर ओंकारनाथ गर्ग ने स्मृति चिन्ह भेंट किया।अन्त में श्री सुभाष त्यागी, प्रशासन नियंत्रक ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

सीएसआईओ में सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह

केन्द्रीय वैज्ञानिक उपकरण संगठन में 26 सितंबर, 2007 को सीएसआईआर का 66वां स्थापना दिवस मनाया गया। संगठन की सभी प्रयोगशालाएं आम जनता के लिए खुली रखीं गई। विभिन्न विद्यालयों, इंजीनियरिंग कॉलेज, विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों एवं आम जनता सहित लगभग 650 आगंतुकों ने संगठन की विभिन्न प्रयोगशालाओं को देखा। इससे उन्हें संगठन में विकसित की जा रही प्रौद्योगिकियों की जानकारी प्राप्त हुई तथा संगठन के वैज्ञानिकों के साथ बातचीत करने का अवसर मिला।

दोपहर बाद संगठन सभागार में हुए कार्यक्रम में प्रो. मंजीत एस. कंग, कुलपति, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना ने **आर एंड डी एजेंडा फॉर फूड सिक्योरिटी** विषय पर स्थापना दिवस व्याख्यान दिया। उन्होंने अपने भाषण में भारतीय कृषि में स्वतंत्रता के पश्चात हुए तीव्र विकास की जानकारी दी तथा कृषि संबंधी विविध विषयों यथा खाद्य उत्पादन, कृषि-भूमि आंकड़े, खाद्य प्रक्रमण, अवसंरचना, पर्यावरण, मंडीकरण आदि पर चर्चा की। प्रो. कंग ने भविष्य की कृषि विकास योजनाओं में कृषि विश्वविद्यालयों, अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशालाओं तथा नीति-निर्माताओं की भूमिका का महत्व बताते हुए कृषि विज्ञान के अग्रणी क्षेत्रों में उत्कृष्टता के विकास की आवश्यकता पर बल दिया। प्रो. कंग ने कहा कि किसी भी कार्य के लिए आपसी सहयोग अत्यंत महत्वपूर्ण होता है तथा सीएसआईओ व पंजाब कृषि विश्वविद्यालय सूचना प्रौद्योगिकी, नैनो विज्ञान, अत्याधुनिक कृषि के क्षेत्र में मिलकर महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं।

इस अवसर पर डॉ. पवन कपूर, निदेशक, सीएसआईओ ने मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए सीएसआईआर के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों पर प्रकाश डाला तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में परिषद के योगदान को याद किया। उन्होंने युवा वैज्ञानिकों और स्कूली विद्यालयों के लिए सीएसआईआर की विभिन्न प्रोत्साहन एवं पुरस्कार योजनाओं की जानकारी प्रदान की। डॉ. कपूर ने संगठन की वर्तमान योजनाओं और भावी योजनाओं की भी चर्चा की। इससे पूर्व मैसर्स रिकॉडर्स एंड मैडिकेयर सिस्टम्स प्रा. लि., चण्डीगढ़ तथा बीएचईएल, गुड़गाँव के साथ 2 परामर्शी समझौतों; मै. राम्स ऑटोमेशन, चेन्नई के साथ 1 प्रौद्योगिकी हस्तांतरण; तथा बीएचईएल, गुड़गाँव के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

डॉ. पवन कपूर गत वर्ष सेवानिवृत्त हुए एक कर्मी को सम्मानित करते हुए

प्रो. मंजीत एस. कंग स्थापना दिवस पर आयोजित प्रतियोगिताओं में से एक की विजेता को पुरस्कृत करते हुए

इस समारोह में सीएसआईआर में निरन्तर 25 वर्ष की सेवा पूरी कर चुके एवं सितम्बर, 2006 से अगस्त 2007 तक की अवधि में सेवानिवृत्त हुए कर्मियों को शॉल एवं स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह के अन्तर्गत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरण से सम्पन्न हुआ। सीएसआईआर स्थापना दिवस कार्यक्रमों के तहत 19 सितंबर, 2007 को सीएसआईओ सदस्यों के बच्चों के लिए दो वर्गों में निबन्ध लेखन प्रतियोगिता, भाषण, कविता पाठ एवं कथा वाचन प्रतियोगता का आयोजन किया गया था।

कार्यक्रम के अन्त में श्री एस.के. सदाना ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

सीरी, पिलानी में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन

केन्द्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान, पिलानी में 03 से 14 सितम्बर, 2007 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। इस अवधि में कुल 11 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। श्रुतलेख (हिन्दी भाषी), श्रुतलेख (अहिन्दी भाषी), टिप्पण और प्रारूप लेखन, अनुवाद व भाषा ज्ञान, निबंध लेखन, कविता पाठ (स्वरचित), कविता पाठ (अन्य कवि), प्रशासनिक प्रस्तुतीकरण तथा आशुभाषण। इस वर्ष संस्थान में कार्यरत परियोजना सहायकों तथा प्रशिक्षणार्थियों के लिए भी अलग वर्ग में निबंध लेखन, कविता पाठ (स्वरचित), कविता पाठ (अन्य कवि), तथा तकनीकी प्रस्तुतीकरण का आयोजन किया गया। सभी प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों ने अत्याधिक उत्साह के साथ भाग लिया।

विभिन्न प्रतियोगिताओं के 39 विजेताओं को पुरस्कारस्वरूप अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोश, महत्वपूर्ण विषयों पर प्रसिद्ध लेखकों की पुस्तकें एवं प्रमाण-पत्र वितरित किए गए। साथ ही वर्ष 2006-07 के दौरान संस्थान में लागू 4 प्रोत्साहन योजनाओं के अंतर्गत अपना सरकारी कामकाज हिन्दी में करने के लिए 16 सहकर्मियों को भी पुरस्कृत किया गया।

पुरस्कार वितरण एवं समापन

हिन्दी पखवाड़े का समापन हिन्दी दिवस (14.09.2007) पर आयोजित हिन्दी दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह के साथ हुआ। हिन्दी दिवस पर आयोजित इस समारोह का संचालन करते हुए वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी डॉ. श्याम नारायण मिश्र ने बताया कि इस वर्ष आयोजित कुल 11 प्रतियोगिताओं में 310 सहकर्मियों ने भाग लिया

अपने संक्षिप्त उद्‌बोधन में उन्होंने सहर्मियों को वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी के बढ़ते प्रभाव की जानकारी दी। इस अवसर पर उन्होंने 13 से 15 जुलाई 2007 को न्यूयार्क में आयोजित विश्व हिन्दी सम्मेलन पर भी चर्चा की। उन्होंने बताया कि इस वर्ष सम्मेलन का विषय विश्व मंच पर हिन्दी था जिसमें हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा बनाने पर जोर दिया गया।

सहकर्मियों को संबोधित करते हुए निदेशक महोदय

उद्‌घाटन समारोह का संचालन करते हुए वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. चन्द्रशेखर ने विभिन्न प्रतियोगिताओं व प्रोत्साहन योजनाओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया। उन्होंने पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह में सभी पुरस्कार विजेताओं को हार्दिक बधाई दी तथा सभागार में उपस्थित सहकर्मियों को संबोधित करते हुए कहा कि भाषा समाज व राष्ट्र की पहचान से जुड़ी होती है। उन्होंने बताया कि राजकाज के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा राजभाषा व किसी राष्ट्र के नागरिकों द्वारा आपसी संवाद के लिए सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा राष्ट्रभाषा है। प्रत्येक भाषा स्वयं में संपूर्ण है, संस्कृति की संवाहक है। भाषा परिवर्तनशील होती है। भाषा समाज व संस्कृति के अनुसार बदलती रहती है।

भारत में भाषा की यात्रा की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि आरंभ में भारत की भाषा वैदिक संस्कृत थी, फिर संस्कृत, पालि, प्राकृत अपभ्रंश से होते हुए आज वह स्थान हिन्दी ने ले लिया है। भाषा का जुड़ाव हमारे अस्तित्व से होता है। भाषा व्यक्ति को व्यक्ति से जोड़ती है। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि भाषा जीवन की पहचान है तथा इसका व्यक्ति से आजीवन संबंध होता है। यह सम्मान की अधिकारिणी है। अतः हमारा प्रयास है कि हम अधिक से अधिक लोगों को इससे जोड़ें। हमारा कल बेहतर हो, हमें ऐसी भावना रखनी चाहिए। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए संस्थान में भी हिन्दी से अधिकाधिक साथियों को जोड़ने के लिए ही इस वर्ष परियोजना सहायकों तथा प्रशिक्षणार्थियों के लिए प्रतिभागिता की विशेष व्यवस्था की गई। उन्होंने कहा कि पुरस्कार मिलना अच्छा होता है पर प्रतिभागिता अधिक महत्वपूर्ण होती है। उन्होंने कहा कि हमें किसी भी भाषा के प्रति पूर्वाग्रह से ग्रसित नहीं होना चाहिए बल्कि अधिक से अधिक भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रयासरत रहना

धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए डॉ. ललित मोहन जोशी

चाहिए परन्तु संस्थान में अपने कामकाज के लिए अपनी मातृभाषा एवं राजभाषा हिन्दी का ही उपयोग करना चाहिए

इससे पूर्व संस्थान के प्रशासन नियंत्रक एवं आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री विजय कुमार श्रीवास्तव ने वर्ष 2006-07 में राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा किए गए कार्यों की जानकारी दी। इस अवसर पर उन्होंने संस्थान में चलाई जा रही प्रोत्साहन योजनाओं तथा हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को बधाई देते हुए संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी कार्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता बताते हुए भविष्य के आयोजनों में प्रशासन की ओर से हरसंभव सहायता देने का आश्वासन दिया।

अन्त में राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य डॉ. ललित मोहन जोशी, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई देते हुए इस आयोजन में लगे सहकर्मियों, आयोजन समिति के सदस्यों तथा निदेशक महोदय के प्रति आभार व्यक्त किया।

डॉ. पिजूष पाल रॉय राष्ट्रीय खनिज पुरस्कार से सम्मानित

केन्द्रीय खनन एवं ईंधन अनुसंधान संस्थान धनबाद के डॉ. पिजूष पाल, वैज्ञानिक-एफ को भूविज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट योगदानों तथा उनके अनुप्रयोगों के लिये राष्ट्रीय खनिज पुरस्कार-2005 खनन मंत्रालय, भारत सरकार (2007 में प्रदान किया गया) से सम्मानित किया गया है। वर्तमान में डॉ. राय ब्लास्टिंग विभाग के प्रमुख हैं साथ ही वे संस्थान के रेस्पिरेट्री प्रोटेक्शन लैबोरेट्री, माइन स्टोविंग, स्लोप स्टेबिलिटि, हाइड्रोलॉजी और वेंटिलेशन विभागों के वैज्ञानिकों के समन्वयक भी हैं। सीआईएमएफआर में 22 वर्षों के कार्यकाल में उन्होंने 150 से भी ज्यादा सुरंगों तथा खदानों में तथा देश के 45 प्रतिष्ठित हाइड्रोइलेक्ट्रिक परियोजनाओं में कार्य किया है। उन्हें यह पुरस्कार उत्कृष्ट ब्लास्ट पैटर्न विकसित करने के लिये दिया गया है। उनके द्वारा विकसित शॉक ट्यूब सिस्टम्स तथा इकोफैण्डली अन्तर्भौम ब्लास्टिंग ऑपरेशन का प्रयोग भारत की लगभग 80 प्रतिशत सुरंगों में किया जा रहा है।

सीआईएमएफआर के डॉ. पी. पालरॉय, श्री सीसराम ओला, खानमंत्री, भारत सरकार से राष्ट्रीय खनिज पुरस्कार प्राप्त करते हुए, साथ में दिखाई दे रहे हैं डॉ. टी. सुब्बारामी रेड्डी, खान राज्यमंत्री, भारत सरकार

डॉ. रॉय तथा उनके दल ने हाल ही में ही एक हैण्डी तथा साफ्टवेयर (जावा-स्विंग) लैंग्वेज जारी किया है जिसका प्रयोग कोयला और खान मंत्रालय के एस एण्ड डी परियोजनाओं से सम्बन्धित ब्लास्टिंग गैलरी पैनलों में किया जायेगा।

डॉ. रॉय की दो पुस्तकें (भारत तथा विदेशी) 2 गाइडलाइनें, और लगभग 89 वैज्ञानिक शोधपत्र राष्ट्रीय/ अन्तरराष्ट्रीय स्तर की शोध पत्रिकाओं, सेमिनार तथा संगोष्ठियों की प्रोसीडिंग में प्रकाशित हुये हैं।

उन्हें अब तक सीएसआईआर-1989 का युवा वैज्ञानिक पुरस्कार, पहला सीएसआरआई-व्हिटेकर अवार्ड-1993 तथा द इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (भारत)-1997 का हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड पदक भी मिल चुके हैं।

आई ए सी एक्सपोः 2007 में एन ए एल का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शक पुरस्कार

राष्ट्रीय वांतरिक्ष प्रयोगशालाएं (एनएएल), बंगालुरू को 24-28 सितम्बर 2007 के दौरान हैदराबाद में आयोजित इंटरनेशनल एस्ट्रोनॉटिकल कांग्रेस (आईएसी) और स्पेस प्रदर्शनी में सर्वाधिक सूचनात्मक प्रदर्शन को श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शक का पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

इस प्रदर्शनी में एनएएल को अपनी सक्षमताओं और प्रौद्योगिकी के प्रदर्शन का सुअवसर मिला था। इस प्रदर्शनी में अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर सुप्रसिद्ध एरोस्पेस तथा एस्ट्रोमैटिक इण्डस्ट्री ने प्रतिभागिता की। कई आगन्तुकों ने प्रदर्शनी में रैण्डम प्रौद्योगिकियों पर अत्यन्त रुचि दिखाई। एरोनॉटिकल इंजीनियरिंग के विद्यार्थियों ने एनएएल की परियोजनाओं में कार्य करने की इच्छा जताई।

हैदराबाद स्थित इन्टरनेशनल कन्वेंशन सेंटर में इसरो एवं एस्ट्रोनॉटिकल सोसायटी ऑफ इंडिया द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित प्रदर्शनी में आईएएसी ने 58 सत्र आयोजित किये तथा प्रदर्शनी कन्वेंशन सेंटर के पास स्थित **हाइटेक्स** कॉम्प्लैक्स में आयोजित की गई।

एनएएल की टीम में श्री सी.वी. गिरिराज, श्री एम. गोपीनाथ तथा डॉ. एन.एन. सत्यनारायण सम्मिलित थे।

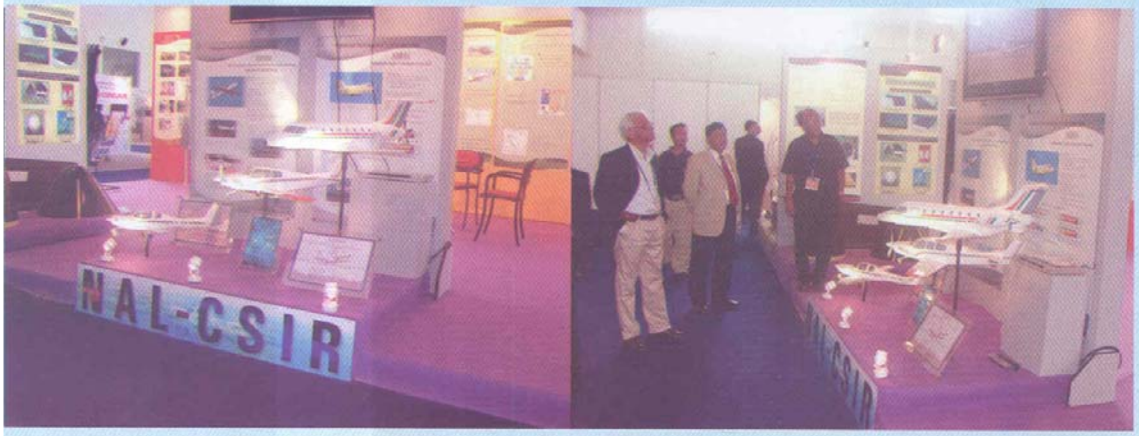

राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (निस्केयर), डॉ. के.एस. कृष्णन मार्ग, नई दिल्ली-110012 के लिए एस.के. रस्तोगी द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित, निस्केयर प्रेस द्वारा मुद्रित।

संपादकः दीक्षा विष्ट; अनुवादः मीनाक्षी गौड़; डिजाइन एवं ले आऊटः मलखान सिंह; कम्पोजिंगः कृष्णा

फोनः 25841846, 25846301, 2584303, 25842990, 25846304-7/371 ग्रामः PUBLIFORM. New Delhi; फैक्सः 25847062

ई-मेलः csirsamachar@niscair.res.in वेबसाइटः http://www.niscair.res.in पत्रिका प्राप्त न होने की स्थिति में फोन नं. 25841647 पर सम्पर्क करें